भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 11 | उदयपुर मंगलवार 15 जून 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

इतिहास लिखित ही नहीं, मौखिक और कण्ठासीन भी

हमारा अधिकांश घटना-प्रसंग स्मृतियों में जड़ाव लिये होता है जो लिखित नहीं, मौखिक, कण्ठासीन होता है। क्या वह धरोहर जो अधिकाधिक और व्यापक तथा लम्बा स्थायीत्व लिए तथ्य तथा साक्ष्यपरक होती है, इतिहास नहीं होती ? इसलिए अब तक इतिहास के नाम पर जो लेखन किया गया वह अधूरा, अपूर्ण तथा अप्टूडेट नहीं कहा जा सकता। ऐसा इतिहास लेखन उस कणकोले की तरह है जिसके माध्यम से कोई महिला अपनी एक आंख को सर्वथा छिपाती हुई घूंघट के पल्लू का छोटा-सा खिड़का बनाकर दूसरी आंख से बमुश्किल देख पाती है। इति अथवा बीती घटनाओं का कोरा लेखन समझू लेखन नहीं होकर इति का हास ही अधिक बनता है।

इतिहास वही नहीं होता जो किताबों में लिखा होता है। ऐसा इतिहास पूरा नहीं होता और बाजवक्त सत्य कथन वाला भी नहीं होता। हमारा अधिकांश घटना-प्रसंग स्मृतियों में जड़ाव लिये होता है जो लिखित नहीं, मौखिक, कण्ठासीन होता है। क्या वह धरोहर जो अधिकाधिक और व्यापक तथा लम्बा स्थायीत्व लिए तथ्य तथा साक्ष्यपरक होती है, इतिहास नहीं होती ?

सच तो यह है कि किसी भी समाज, कुनबा तथा राष्ट्र के सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक तथा ऐतिहासिक समग्रता को जानने-समझने के लिए जनधारणा अथवा जनाधारित लोकस्मृतियों में पैठित घटना-सन्दर्भ-समझ को नजरअन्दाज कर हम किसी भी तथ्य-सत्य तक नहीं पहुंच सकते।

इसलिए अब तक इतिहास के नाम पर जो लेखन किया गया वह अधूरा, अपूर्ण तथा अप्टूडेट नहीं कहा जा सकता। ऐसा इतिहास लेखन उस कणकोले की तरह है जिसके माध्यम से कोई महिला अपनी एक आंख को सर्वथा छिपाती हुई घूंघट के पल्लू का छोटा-सा खिड़का बनाकर दूसरी आंख से बमुश्किल देख पाती है। इति अथवा बीती घटनाओं का कोरा लेखन समझू लेखन नहीं होकर इति का हास ही अधिक बनता है।

यह भी कि जिन समुदायों में लिखने की परम्परा अथवा लिखित शब्द ही नहीं है वहां सब कुछ जानकारी मौखिक रूप में चली आ रही परम्पराशीलता में ही है। जैन, बौद्ध और हिन्दू परम्परा में प्रचलित बहुत सारी मान्यताएं और उनके स्रोत परम्परा से ही लिए गए हैं। ये ही स्मृतियां एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में अवतरित होती रहती हैं। इस प्रक्रिया में उनका पुनर्पाठ, पुनर्वास, पुनर्दशन अथवा पुनर्स्थापन होता रहता है।

व्यक्ति या समूह की स्मृति में दर्ज हुई हर घटना जीवन को तो प्रभावित करती है पर इतिहास नहीं होती किन्तु इतिहास छूती बातें जिन समाजों में प्रचलित होती हैं वे उनके अतीत के पुनर्निमाण में अथवा उसे किसी न किसी प्रकार यादगार बनाये रखने में सहायक होती हैं। उनसे उस समाज के सामाजिक सरोकारों तथा जीवन परिपालन के दर्शन अथवा सिद्धान्तों की जानकारी भी मिलती है।

वैयक्तिक स्मृतियों की तुलना में सामूहिक स्मृतियां अधिक प्रभावी, असरकारी तथा विश्वसनीय होती हैं। इसका कारण वे समूह द्वारा बार-बार सुनाई जाने वाली, दोहराई जाने वाली तथा स्वीकार की जाने वाली होती हैं जबकि व्यक्तिवादी स्मृतियों में व्यक्ति का अपना वर्चस्व, दिखावा, बढ़ा-चढ़ाकर अभिव्यक्त करने की प्रवृत्ति और जोड़तोड़ की गुंजाइश देखने को मिलती है।

मिथक इतिहास को एक अलग ढंग से बान्धे रखते हैं। रामायण के राम और महाभारत के कृष्ण भारतीय जनमानस में जिस ढंग से हजारों वर्षों की भावभूमि का मिथकीय इतिहास लिये हैं वह अद्‌भुत है। ऐसा इतिहास कभी मरता, खण्डित नहीं होता वरन अधिक सबल, सशक्त तथा सत्यनिष्ठ बनकर बलिष्ठ होता रहता है। उसका तथ्यपरक इतिहास खोजना इतिहास की एक खतरनाक घातक कोशिश ही समझी जाती है।

इतिहास का लेखन व्यक्ति के नजरिये का प्रतिफल भी होता है। कोई लेखक किस विचारधारा अथवा मान्यता का है, इसका असर भी प्रभाव देता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा को ही देखें तो फ्रांसीसी लेखक गार्सांद तासी से शुरू होती जार्ज ग्रियर्सन, मिश्रबन्धु, रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से लेकर आजादी के बाद के लेखकों तक मिलती है।

शुक्लजी का लिखा इतिहास विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित होने के कारण सर्वाधिक पढ़ाया जाता रहने से सर्वाधिक चर्चित हुआ। द्विवेदीजी ने उनकी कई मान्यताओं का खण्डन किया तो उनकी शिष्य मण्डली ने भी उसे आगे नहीं बढ़ाया जिससे उसकी मान्यता का उबाल शिथिल पड़ गया। भागजोग से बाद में रामविलास शर्मा ने जब अपना पूरजोर समर्थन दिया तो शुक्लजी का इतिहास पुनः सबकी आंखों का तारा बन कालजयी माना जाने लगा। ऐसा अन्य क्षेत्रों में भी हुआ।

मध्ययुग में मीरां के अलावा अन्य कोई हिन्दी कवयित्री साहित्य के इतिहास में अपनी किरण नहीं दे पाई जबकि आधुनिक युग में मीरां द्वारा रचित कहे जाने वाले साहित्य की प्रामाणिकता पर ही पुनः खोज की आवाजें अधिक बुलन्द होती पाई जा रही हैं। दलितों, स्त्रियों तथा अल्पसंख्यकों की पक्षधरता नहीं रहने से उनका इतिहास किसी का समर्थन नहीं ले पाया। परिणाम यह भी हुआ कि मुख्यधारा तक के इतिहासकारों द्वारा स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण नायक ही खास जगह नहीं ले पाये। कई खास छूट गये और ना-खास खास बनकर भी पहचान बने।

आज इतिहास लेखन के समक्ष अनेक चुनौतियां हैं। औपनिवैशिक दौर में लिखे गये इतिहास के तथ्यों तथा नजरियों पर लगातार सन्देह किया जाकर उन्हें लगभग नकारा जा रहा है और फिर से प्रामाणिक इतिहास लेखन पर जोर दिया जा रहा है।

जमीनी हकीकत से जुड़े समाजों को सदैव ही महत्व नहीं दिया जाकर उन्हें हाशिये पर भी ठीक से नहीं दिखाया गया। आदिवासियों के योगदान को तो सिरे से नकारा ही जाता रहा।

उल्लेखनीय यह भी है कि हिन्दी साहित्य की परम्परा को प्राचीन दिखाने की गरज से हिन्दी प्रदेशों के क्षेत्रों में बोली जाने वाली मैथिली, ब्रज, अवधी, डिंगल आदि भाषा-साहित्य को महत्वपूर्ण बताया गया किन्तु आधुनिक काल में प्रवेश करते ही इन्हें तख्त से उतार दिया गया। यही नहीं, उनकी तख्तियां बदल कर उन्हें भाषा से बोली बनाकर इतिहास से आउट भी कर दिया गया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने इतिहास लेखन के इस रगड़न-झगड़न को तब ही भांप लिया था। इसीलिए उन्होंने कह दिया था कि वह देश भाग्यशाली है जिसका कोई इतिहास नहीं है। **-म. भा.**

हर हाथ मुबाइल क्या आया, सब छूट गया कुछ टूट गया

डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'

हर हाथ मुबाइल क्या आया,
सब सीधा मिलना छूट गया।
बच्चों से क्या बूढ़ों से भी,
बातों का रिश्ता टूट गया।। 1।।
पापा सोकर जब उठते हैं,
फट हाथ मुबाइल लेते हैं।
चुप रहें, न पूछें हम कुछ भी,
इंगित से यह कह देते हैं।। 2।।
दफ्तर की जल्दी होती है,
झटपट तैयारी करते हैं।
अपने मन की कुछ कहने में,
मां-बच्चे हम सब डरते हैं।। 3।।
मां 'टिफिन' सजा पकड़ा देतीं,
वे 'कार' उठा चल देते हैं।
बैठे गाड़ी में बतियाते,
हंस किस को उत्तर देते हैं।। 4।।
शायद लिखना कुछ भूल गए,
साहब की कल की फाइल पर।
अब क्षमा मांगते बैठे हैं,
कानों से लगे मुबाइल पर।। 5।।
दफ्तर से लौटे थके-थके,
घर आकर 'बेल' बजाते हैं।
दरवाजा खुलते ही सीधे,
अपने कमरे में जाते हैं।। 6।।
कहते हैं- मुझे मुबाइल पर,
मित्रों से बातें करनी हैं।
दिन भर के थके हुए मन की,
सारी पीड़ाएं हरनी हैं।। 7।।
खाने-पीने की बात नहीं,
दफ्तर में खाकर आया हूं।
जो टिफिन कार में भर रखा,
वह बच्चों को भी लाया हूं।। 8।।
पत्नी कहती- 'मुझको निद्रा,
अब बोलो कैसे आएगी।
तुम बात करोगे मित्रों से,
वह टूट बीच में जाएगी।। 9।।
इसलिए सुलाकर बच्चों को,
मैं भी सुनने को आऊंगी।
क्या छिपा तुम्हारे मन में है,
कुछ मैं भी तो सुन पाऊंगी।। 10।।

तीन तुक्तक

(1) मुसीबत जब आती है, अकेली नहीं आती।
वींद के साथ वन्यागड़े को जिमाने लाती।
कुदरत की माया है
परिवर्तन लाया है
धरती पर पाप बढ़ा, ठोकर सत्वंती खाती।

(2) कोरोना आया दो-दो दाराएं लाया है।
उमड़घुमड़ अंधियारा डूंज वायरा पाया है।
एक ब्लेक फंगस है
दूजा व्हाईट रंगस है
दो गज की दूरी नहीं दस गज की काया है।

(3) ठगिया बहुरूपिया भांड बड़ा चितचोरा है।
गिरगिट सा रंग बदल बांका बदहोरा है।
चालबाज चंटबंट
बड़बोला अंटसंट
डाकी बन्दर सा धोखेबाज धूर्त मोरा है।

पोथीखाना

शेखावाटी ख्यालों पर गवेषणामूलक गहन गंभीर अध्ययन

राजस्थान का शेखावाटी अंचल अपनी पारम्परिक सम्पदा-संस्कृति के संरक्षण-सहेजन की दृष्टि से दूर-सुदूर तक पहचान लिये है। प्राचीन धरोहर के रूप में यहां की कलात्मक हवेलियां तथा जनजीवन के खासा मनोरंजन देते ख्याल एवं खिलाड़ियों ने भी कम नाम नहीं किया।

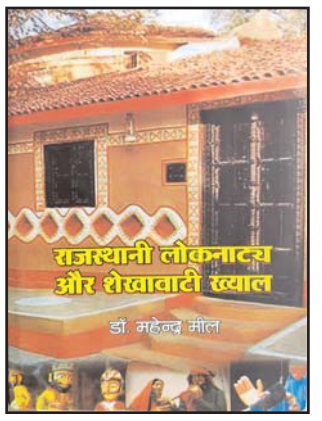

इसी उम्दा सोच को लेकर डॉ. महेन्द्र मील ने शेखावाटी ख्याल सम्पदा को अपनी शोध का विषय बना पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। 'राजस्थानी लोकनाट्य और शेखावाटी ख्याल' नाम से यह प्रबन्ध छह अध्याय से चार सौ पृष्ठों में अपनी मूल्यवान काया लिये बीकानेर के सूर्यप्रकाश मन्दिर ने छापा है जो 800 रूपया कीमती है।

समय के असमय होते परम्पराशील लोकसांस्कृतिक विधाओं का क्षरण होता है। वैसे ही जैसे द्रुतचलित रेल की तरह रास्ते के दृश्यों का अदृश्य लोप देखने को मिलता है। इस दृष्टि से अपेक्षा तो यह थी कि ऐसे संजीदा पुख्ता अध्ययन के साथ अधिकाधिक चित्र होने थे पर एक भी चित्र नहीं होना, अखरना स्वाभाविक है।

यह ठीक भी कहा जा रहा है कि इन दिनों विश्वविद्यालयों में लोकसाहित्य-लोकसंस्कृतिकपरक विषयों पर धड़ल्ले से कार्य हो रहा है पर उसका पानीदार पक्ष उतार दिये लग रहा है। ऐसे समय में महेन्द्र मील का यह कार्य उतना ही प्रशंसनीय मील का पत्थर कहा जाना चाहिये।

पहला अध्याय ही यों तो राजस्थानी लोकनाट्य : सामान्य विवेचन का है पर यह विवेचन असामान्य होकर 136 सन्दर्भ लिये पूरे सौ पृष्ठों में पतंजलि बना है। दूसरा अध्याय वर्गीकरण और प्रवृत्तियां का है जो 54 सन्दर्भ ग्रन्थों से युक्त होकर पाठकों को घर बैठे वह समग्र जानकारी संकेतित करता है जो किसी-न-किसी तरह लोकनाट्यपरक अब तक विवेचनीय बन चुकी है।

अध्ययन के दौरान डॉ. मील ने लिखा- 'राजस्थानी लोकनाट्यों का जितना शोध-सर्वेक्षण व विवेचन व्यक्तिगत रूप से डॉ. महेन्द्र भानावत ने किया है उतना और किसी ने नहीं किया। इन्होंने राजस्थानी लोकनाट्यों को विविध दृष्टियों से वर्गीकृत कर उन्हें एक व्यवस्थित रूप प्रदान किया है। उनका अध्ययन आदर्श व प्रामाणिक है।' (पृ. 104)

ग्रन्थ में अपनी सम्मति में प्रो. कुंवरपालसिंह का यह कथन द्रष्टव्य है- 'हिन्दी शोध की जो दुर्दशा आज देखने को मिलती है, यह शोधप्रबन्ध उसका अपवाद है। शॉर्टकट की संस्कृति के समय में यह चुनौतीपूर्ण कार्य हिन्दी के शोधार्थियों के लिए एक उदाहरण भी है। श्री मील का यह शोधप्रबन्ध आश्वस्त करता है कि हिन्दी में अच्छे शोध की अभी भी सम्भावनाएं हैं। उन्होंने शेखावाटी के 28 ख्याल लेखकों का परिचय भी दिया है। इस काव्य-रूपक को गायक शताब्दियों से गा रहे हैं। यह जनजीवन का विशाल समुद्र है जिसमें इतिहास, संस्कृति, जनजीवन, लोकभाषा, राजनीति सभी कुछ संचित है। यह खण्डित जीवन का कोलाज नहीं होकर सम्पूर्ण समाज की अभिव्यक्ति है।' (पृ. 7-8)

प्रो. मैनेजर पाण्डेय के मत में, 'यह एक ऐसा शोधप्रबन्ध है जिसमें साहित्य की आलोचना और संस्कृति की आलोचना का गहरा सम्बन्ध है। श्री मील का लोकनाट्य परम्परा का ज्ञान व्यापक है और ख्याल के विभिन्न रूपों की जानकारी भी समृद्ध है।' (पृ. 7)

कुल मिलाकर ग्रन्थ के लिए यही कहा जा सकता है, 'यूं तो देखा तो बहुत कुछ देखा मगर तुमसा नहीं देखा।'

संघर्ष की कविताओं के बीच

डॉ. शुभदर्शन मूलत: संघर्ष के कवि हैं। सन् 1978 से लेकर संघर्षजीवी उनके सात प्रकाशन इसके गवाह हैं। तब से क्रमश: शब्दों के दायरे, लड़ाई खत्म नहीं हुई, संघर्ष जारी है, संघर्ष बस संघर्ष, संघर्ष ममता का, संघर्ष का छोर नहीं और संघर्ष का जख्म के बाद संघर्ष के लम्हें नामक यह ताजा संग्रह अप्रेल 2021 का 63 कविताओं में 144 पृष्ठ संजोये 300 रूपयों में पाठकों के लिए हस्तगत है जिसे सम्या प्रकाशन, बी-3/3223 वसन्तकुंज, नई दिल्ली-70 ने इसे बड़े मनोयोग से छापा है।

'संघर्ष के लम्हें' की कविताएं किसान की आत्मा, लोकडाउन, नोटबन्दी, शाहीनबाग, आक्रान्ता लोकतन्त्र, जनतन्त्र का पिंजरा, शीशा झूठ नहीं बोलता, संवदेनहीन आत्मा, सिद्धान्तहीनों में सिद्धान्त, सरकारी दलाल, तिलिस्म का इन्तजार जैसे शीर्षबन्धों में आवेष्ठित हैं।

ऐसी सभी कविताएं समय के वर्तमान, ताजा परिवेश की जनभोगी संघर्ष-बोधि क्रान्तदर्शी स्वरूप देतीं युग-सत्य उद्घाटित करती हैं। सभी कविताएं इस सन्दर्भ में दस्तावेजी कविताएं हैं जो सत्ता-सिंहासन के समक्ष चुनौतीपूर्ण संघर्ष के लिए बांका तेवर लिए अपना आक्रोश देती हैं। उदाहरण स्वरूप चन्द पंक्तियां द्रष्टव्य हैं-

आदमी मिट्टी के लौंदे हैं, जो बोलते हैं उनकी जीभ नहीं, जो देखते हैं उनकी आंख नहीं, जो चलते हैं वे पांवों से बेजार हैं, बस अंधभक्ति का दौर है। (पृ. 21) खरीदकर लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ, कर दी है कलम की नसबन्दी। (पृ. 23) खाने के नाम पर अन्दर भूखे हैं, बाहर लाठियां, सरकारी आंकड़े मिलाने में व्यस्त है नेता का मुनीम। (पृ. 37) कोरोना की आड़ में सिर्फ फैला रहा है दिशा निर्देशों का जंगल, प्रशासन हो गया है पंगु, सामाजिक दूरी, कर्फ्यू ने सत्ता पर काबिज मठाधीशों की ईमानदारी पर लगा दिया है ग्रहण। (पृ. 39) सभी चैनल पर चल रही है मन की बात। (पृ. 41) सफेद शिलालेखों पर पोत रहे भगवा, जड़ से उखाड़ फेंके विश्वासघात का निरन्तर बढ़ रहा जंगल। (पृ. 54) हिंजड़ों की फौज में घिरा नायक, तालियों के शोर में कुछ भी सुनने को तैयार नहीं। (पृ. 66)

बकवास भाषणों, झूठे वादों से परेशान है मिट्ठू। (पृ. 67) देश का चौकीदार दिन में तीन बार महंगे सूट बदल रहा हो। (पृ. 69) अन्धभक्तों की तरह दूर छिटक अपने पैबन्द, मर गई है मेरी आत्मा। (पृ. 86) नोटबन्दी जीएसटी की घुटन भरी उमस में छटपटा रहे मौसम को अन्धभक्तों ने कर दिया सरगना घोषित, प्रधानमंत्री के विदेशी दौरों से हवा में बढ़ी है ऑक्सीजन। (पृ. 119) राजनीति की भूख सीमा जाति धर्म समाज किसी बन्धन में नहीं बन्धती। (पृ. 130)

कहना नहीं होगा कि संग्रह की कविता की हर पंक्ति कवि की नई उद्भावनाओं, नये प्रयोगों, नये बिम्बों तथा नव्य-भव्य प्रस्तुति लिये हमें सावचेत बनाये रखती है और जागते रहो की चोट नगारा वादन में डंके की ध्वनि दिये सोने की बजाय सोचने को विचारों की वनशाला में बान्धे रहती है। **- म. भा.**

दो पाटों के बीच पिसती वैक्सीन की राजनीति

-प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत-

पूरा देश कोरोना महामारी से जूझ रहा है। गंगा में लाशों को बहाया जा रहा है। एक पिता अपनी पुत्री की लाश कार के अगली सीट पर सुला कर ले जा रहा है। ये मार्मिक दृश्य दिल दहलाने के लिए पर्याप्त हैं। इस समस्या का एक ही निदान है वैक्सीनेशन किन्तु दुर्भाग्य से भारत में वैक्सीनेशन निर्यात पर गफलत की राजनीति गरमाई हुई है।

यह गफलत सत्ता एवं विपक्ष दोनों की तरफ से है। दोनों या तो वास्तविक तथ्य से अनजान हैं या फिर आम लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। एक तरफ हमारे प्रधान सेवक जनवरी माह में विश्व आर्थिक मंच पर यह कहते हैं कि भारत ने कोरोना पर जीत हासिल कर ली है और हमने 80 से ज्यादा देशों को वैक्सीन निर्यात कर मानवता की नजीर पेश की है तो कुछ अति उत्साही लोगों ने हमारे प्रधान सेवकजी को वैक्सीन गुरु कहने में भी परहेज नहीं किया।

जब कोरोना की दूसरी लहर आई तो पूरे भारत को अपनी गिरफ्त में ले लिया। उस समय सरकार ने भारतीय कंपनियों को पर्याप्त वैक्सीनेशन खरीदने का आदेश नहीं दिया। जब अमेरिका ने जुलाई 2020 में अपने 32 करोड़ लोगों के लिए 60 करोड़ डोज खरीदने का कंपनियों को एडवांस दे दिया तब हमारी सरकार ने 135 करोड़ लोगों के लिए केवल एक करोड़ वैक्सिन खरीदने का आर्डर दिया था। जाहिर है, सरकार टीकाकरण उत्सव मनाने में मशगूल हो गई। वह यह नैरेटिव स्थापित करने में सफल रही कि भारत वैक्सीन में अग्रणी है और हमने 21 दिनों में ही 5 मिलियन डोज लगा कर एक मिसाल पेश की है जबकि 140 करोड़ की जनता के सामने यह ऊंट के मुंह में जीरा था।

सरकार को लगा कि हमारे यहां कोरोना पूर्णतया नियंत्रण में है किन्तु चुनाव की रैलियों का रेला, कुम्भ मेला का खेला जैसे आयोजनों ने दूसरी लहर का विस्फोटक रूप धारण कर लिया। इस पर विपक्ष सवाल उठाने लगा कि यहां के बच्चों की वैक्सीन विदेश क्यों भेज दी गई। हकीकत में वैक्सीन का निर्यात मोदी सरकार के कहने पर नहीं अपितु उस अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध का परिणाम था जो कंपनी ने अंतर्राष्ट्रीय फिलैंथरोपिक निकायों एवं जीएआई के साथ किया था।

जब सिरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के सीईओ आदर पूनावाला ने वैक्सीन की उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए सरकार से मदद की गुहार लगाई तो उसे निराशा हाथ लगी। तब कंपनी ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास तेज किए तो कुछ अंतर्राष्ट्रीय उपकारी संस्थाओं तथा गरीब राष्ट्रों में टीकाकरण करने वाली प्रमुख संस्था जीएवीआई ने सिरम को 600 मिलियन डॉलर की सहायता इस शर्त के साथ दी कि कंपनी 100 मिलियन, 10 करोड़ डोज सबसे पहले 92 गरीब देशों को आपूर्ति करेगी।

कोविशील्ड वैक्सीन का भी पेटेंट ऑक्सफोर्ड एवं एस्ट्रेजनेका को मिला है। यह कैसा आत्मनिर्भर भारत का उदाहरण है जिसमें फंडिंग एवं पेटेंट दोनों विदेशी हैं। कोवैक्सीन का उत्पादक भारत बायोटेक ने भी वैक्सीन का आविष्कार इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च के साथ मिलकर किया है। भारत सरकार से इन्हें कोई वित्तीय सहायता नहीं मिली इसलिए इसकी उत्पादन क्षमता में बढ़ावा नहीं हो सका पर जब सरकार की चारों तरफ आलोचना होने लगी तो अप्रैल में जाकर सरकार ने इन्हें वित्तीय सहायता देने का निर्णय लिया।

भारत सरकार ने इस बात का श्रेय लेने में कोई कसर नहीं रखी कि कोविशील्ड और कोवैक्सीन दोनों भारतीय कंपनियां बना रही हैं। विश्व के सामने यह नजीर पेश की कि हम विज्ञान के मामले में किसी से कम नहीं हैं किन्तु अभी तक कोवैक्सीन को वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन ने इजाजत ही नहीं दी है।

सरकार और विपक्ष दोनों झूठ बोल रहे हैं। विपक्ष को भी हकीकत का पता नहीं है और विरोध किया जा रहा है। राजनीति का यह कितना अनोखा खेल है कि जहां जो दिखता है वह होता नहीं और होता है वह नजर नहीं आता और जनता हमेशा धोखे में बनी रहती हैं।

सी. ए. हितेष कुदाल को पीएच. डी.

उदयपुर (वि.)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय ने हितेष कुदाल को पीएच. डी. की उपाधि प्रदान की है। हितेष ने 'वेतन के लिए कराधान : वैश्विक स्तर पर एक तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर लेखा एवं व्यावसायिक सांख्यिकी विभाग के प्रो. जी. सोरल के मार्गदर्शन में यह शोधकार्य किया है।

श्री कुदाल ने इस शोधकार्य के लिए विभिन्न महाद्वापों से भारत सहित कुल सात देशों में वेतन के लिए कराधान पर एक तुलनात्मक अध्ययन किया है। इसके निष्कर्ष के रूप में यह सामने आया कि भारत एवं दक्षिणी अफ्रीका में वेतन कर के प्रावधानों में अन्य देशों की तुलना में अधिक जटिलताएं हैं।

स्मृतियों के शिखर (125) : डॉ. महेन्द्र भानावत

विश्व की श्रेष्ठतम मानवमूल्यीय लोककथा

हिन्दुस्तानियों के पास लोक की जितनी जो विविध संपदा, साहित्य, संस्कृति के सेतु और जीवनधर्मिता के आचरण उजास मिलते हैं उससे हम बहुत अनजान हैं। मेरी दृष्टि में विदेशी लोगों ने इसे अधिक पहचाना, अध्ययन का विषय बनाया और अच्छा कार्य कर दिखाया। यह अलग बात है कि खजानों की पहली खोज हमारी रही और हम ही ने उसे जगजाहिर कर सबको इसकी जानकारी तथा अतापता दिया।

मेरे अपने ही अनुभव में राजस्थान की पड़ कला, कावड़ कला पर विस्तृत कार्य करने के लिए मैंने डॉ. स्मिथ तथा जो मिलर को पड़ कला के चितेर श्रीलाल जोशी और पड़ वाचक भोपे-भोपियों से मिलाया। लासण-जूण पर 'रंगायन' में टीप लिखने पर विदेशी अनुसंधित्सुओं ने भारत आकर खोजबीन की। कठपुतलीमंचन पर पहलीबार सर्वोच्च अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार हमारे ही कलाकारों को मिला और पद्मश्री की उपाधि लेनेवालों में भी हमारे प्रांत के ही लंगा, मांगणियार, मांडगायिका, पड़चितेरे, थेवाकलाकार तथा मोलेला के मृणमूर्तिशिल्पी हैं।

पहलीबार मेरे ही संयोजन में जुलाई-अगस्त 1958 में लोककलाकार शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में राजस्थानव्यापी गाने, बजाने, नाचने, कठपुतली नचाने तथा बहुरूपी मनोरंजन करने वाले कलाकारों के जमावड़े ने लोककला संस्कृति का संगम करा दिया। पहलीबार मैंने मेंहदी, माण्डना, सांझी, गणगौर जैसे विषयों पर धर्मयुग में सचित्र आलेख लिखे। भूतों के जमावड़े, दिव्यात्माओं के मेले तथा मारक विद्या मूठ जैसे विषयों पर कलम चलाई। राजस्थान सहित अन्य विविध प्रान्तों का भारत भ्रमण किया और पुस्तकें लिखीं।

राजस्थान का कोई कोर कोना नहीं छोड़ा। यहां प्रचलित लोकनाट्यजनित ख्याल-तमाशों, स्वांगों, लीलाओं पर लिखा और 30 से अधिक पुस्तकों में उनके परचम दिये। पहलीबार लोककला संगोष्ठियां, लोकानुरंजन समारोह, लोकशिल्पी मेलों का आयोजन किया और 500 से अधिक छात्रों, विद्वानों, कलारसिकों का सान्निध्य लेते-देते अनेक विश्वविद्यालयों में लोकसाहित्य, लोककला एवं लोकसंस्कृतिपरक वार्ता, वातायन की खिड़कियां खोलीं। यह कार्य अभी भी जारी है।

सांप-सीढ़ी के खेल पर मेरे द्वारा धर्मयुग में लिखने के उपरान्त डेनमार्क के जेकब स्मीट मडसेन ने अपनी पीएच.डी. का विषय बना देश के कई प्रांतों की यात्राएं कर विविध भाषाओं के दो दर्जन से अधिक सांप-सीढ़ी खेल एकत्र किये। मेरे से भेंट करने पर मैंने सबसे पुराना कपड़े पर चित्रित खेल-चित्र बताया तो उसने उसे अलभ्य उपलब्धि माना। लगभग 13वीं शताब्दी में भारत में ही इस खेल का सूत्रपात हुआ।

कावड़ के साथ मोलेला की माटी की देवी-देवताओं की प्रतिमाएं भी कई विदेशी संग्रहालयों की रौनक बनी हुई हैं। कावड़ निर्माता बसी के कलाकार मांगीलाल मिस्त्री ने परंपरा की टेक रखते हुए कई नये प्रयोग किए, वहीं मूर्ति निर्माता मोहनजी कुम्हार की सब ओर तूती बोली। भीलों में प्रचलित गवरी नृत्य को मैंने पहलेपहल शोधविषय बना डाक्टरेट की उपाधि ली। बाद में देश-विदेश में इसकी गूंज देख मैं बड़ा चकित हुआ। रेगिस्तान के खड़ताल वादक सिद्दीक की हमने पहचान कराई तब वे पद्मश्री भी बने। मारवाड़ी खिलाड़ी उगमराज को मध्यप्रदेश सरकार ने पुरस्कृत किया।

लोककथाओं की ही बात करें तो वे असीम हैं। सृष्टि के उद्भव से लेकर उसके रचाव, बनाव, प्रकृति, पुरूष और जितने भी रहस्य-चमत्कार-कौतुक हैं उनसे जुड़ी लोककथाएं बड़ी जानकारी देती हैं। राजस्थान में सर्वाधिक संकलन, संग्रह, प्रकाशन इन कथाओं को लेकर हुआ है। और तो और यहां हजारों की संख्या में जो कहावतें प्रचलित हैं उनके पीछे भी कथाओं का समंदर ठाठे मारता दृष्टिगत होता है। लोककथापरक प्रकाशित अनेक संकलन इसके गवाह हैं।

मेरा कार्य इस क्षेत्र में मुख्यत: त्यौहार, उत्सव तथा व्रत, अनुष्ठान से जुड़ी कथाओं के अध्ययन, प्रकाशन, संकलन का रहा। बालिकाओं में प्रचलित सांझी उत्सव, महिलाओं में प्रचलित बारह महीनों के व्रतानुष्ठान तथा उनसे जुड़े थापांकन, होली के बाद दस दिनों के अगता में दशामाता से जुड़ी व्रतकथाएं तथा पूरे माह कार्तिक नहाती महिलाओं में प्रचलित कथाओं पर किया गया कार्य मुझे कई दृष्टियों से संतोष-धनी बना गया।

दशामाता पर मेरी आत्मजा कविता ने एक सौ कहानियां संकलित कीं वहीं सांझी पर उसकी छोटी बहिन कहानी ने शोध की। दोनों ने पीएच.डी. के शोधप्रबंध लिखे जो प्रकाशित हुए। राजस्थान की लोककथाओं पर एक विस्तृत भूमिका के साथ मैंने अलग से उम्दा पुस्तक भी लिखी।

इस अध्ययन, अनुसंधान ने ही संभवत: आयरलैंड की शोधछात्रा को किसी ने जानकारी दी होगी जिसके सहारे वह 17 मई 1992 की तपन देती गर्मी में एक दिन उदयपुर आई जब मैं भारतीय लोककला मण्डल में निदेशक था। दिन को एक बजे करीब उसने अचानक मेरे कक्ष में प्रवेश किया।

आते ही अपना आशय प्रकट करते हुए बताया कि उसने लगभग आधी दुनियां की सफर करली है। वह दुनिया की सर्वश्रेष्ठ लोककथा का अध्ययन करने निकली है। उसे एक ऐसी कथा की खोज है जो बहुत बड़ी न हो तथा उसकी विषयवस्तु विश्व मानव से संदर्भ रखती हो।

उसकी बात सुनकर मैंने कहा कि आप हड़बड़ाहट में लगती हैं। कुर्सी पर बैठने का इशारा करते हुए भी आपने अपनी बैठक नहीं पकड़ी और अब इतनी फटाफट में मेरी परीक्षा लेरही हो। तनिक भी सोचने-समझने का समय नहीं देकर पुन: यहां से जल्दी जाने की बात कह मुझे उसने पेशोपेश में डालदिया। वह मुस्कराती रही। मेरे मन में यह भी रहा कि कभी-कभी शोध के कार्य ऐसे भी होते हैं। वह इसलिए भी जल्दी में थी कि जगह-जगह जाकर भी उसे ऐसी कोई कथा हाथ नहीं लगी। यहां भी उसका एक मन यही भाव लिए था कि शायद ही उसे सफलता मिले।

सच भी है, कभी-कभी उपलब्धि प्राप्त करने के लिए अधिक प्रतीक्षा तथा चाख-चाख करना उचित भी नहीं होता। मैंने मन-ही-मन देवता का स्मरण किया। वह हर जरूरतमंद के साथ होकर रक्षा करता है। इसे अप्रत्याशित घटना ही कही जानी चाहिए जब मेरे मन में दशामाता के दिनों में कही जानेवाली शताधिक कहानियों में से एक सूरजनारायण, सूर्यभगवान से संबंधित कथा ने बिजली प्राकट्य-सी दस्तक दी। मैंने उस छात्रा को, टूटीफूटी अंग्रेजी का अट्यावण देते हुए हिन्दी में वह संपूर्ण कहानी सुनादी।

यह कहानी सुन वह उछल पड़ी। चेहरे पर फुरहरी की हंसी बिखेरते, अपनी भुजाओं को फैलाती बोली- 'ऐसी सुंदर, जानकारीपरक सृष्टि-सौंदर्य की कथा मैंने कहीं नहीं सुनीं। मेरा मिशन यहां आकर पूरा हुआ। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद, आभार।' वह सरल किंतु सरस अंग्रेजी में अपनी भावना व्यक्त करगई। मुझे लगा कि वह हिन्दी भी जानती है किंतु बोलने में संकोच करती है, जैसे मैं भी अंग्रेजी तो समझता हूं पर बोलने का अभ्यास आजादी प्राप्ति के समय से ही अनुत्साहित होगया। कारण कि अंग्रेज और अंग्रेजीयत से घृणा का वातावरण चारों ओर परवान पर था। सब पर गांधीजी का पक्का प्रभाव हावी था। सब ओर खद्दर का पहनावा और गांधी टोपी का बोलबाला था।

जो भी हो, मैंने उस छात्रा को जो कहानी सुनाई उसे यहां प्रस्तुत कर रहा हूं-

सूरज भगवान प्रतिदिन दुनिया को जगाने जाते। एक दिन उनकी पत्नी रानादे ने उनसे कहा, 'प्रतिदिन ही सुबह आप घर से निकल जाते हैं, आज थोड़ी देर बैठो तो कुछ मन की बातें करें।' सूरजनारायण बोले, 'रानादे मुझे जाने दो। कीड़ी को कण और हाथी को मण खाने को देना है।' रानादे बोली, 'क्या आप सभी को खाने को देते हो? कोई भूखा नहीं बचता?' सूरजनारायण ने कहा, 'जहां तक मेरी जानकारी है कोई वंचित नहीं रहता है।'

सूरजनारायण ने स्नान-ध्यान किया। तिलक लगाया। चावल चढ़ाया और चलते बने। जाते-जाते रानादे के हाथ में रखी एक डिबिया में चावल गिरा दिया जिसमें एक चींटी भी बंद होगई थी। रानादे को इसका पता नहीं था।

संध्या को जब सूरज घर लौटे तो रानादे ने पूछा,- 'किसी को भूले तो नहीं? कीड़ी को कण और हाथी को मण दे आए?' सूरजनारायण के हां कहते ही रानादे ने चींटी रखी डिबिया खोली तो चींटी चावल लिए घूम रही थी जिसे देख सूरजनारायण को बड़ा अचरज हुआ।

दूसरा दिन हुआ। सूरजनारायण ने जाते समय रानादे से कहा, 'मैं जा रहा हूं। पीछे से कोई आए तो उसे आश देना। जो कुछ मांगे उसे देना। निराशकर मत लौटाना। सूरज के जाते ही थोड़ी देर बाद स्वयं सूरजनारायण कोढ़ी का रूप धर कर आये और भिक्षा मांगते विविध कथन करने लगे, 'मां मुझे रोटी दो। मेरे मुंह में छाले हो रहे हैं। ठीक से बोला नहीं जा रहा है। ठण्डी रोटी मत देना। मेरा मन बत्तीस प्रकार का भोजन और तैंतीस प्रकार की तरकारियां खाने को लालायित है। मुझे गरम-गरम भोजन करा दो। भगवान तुम्हारा भला करे।'

यह सुन रानादे सासूमां के पास पहुंची और भिखमंगे की फरमाइश वर्णित कर बोली, 'उसके पूरे शरीर से कोढ़ जर रही है। इतना जर्जर हो रहा है फिर भी खाने के लिए इतना चटोकड़ापन क्यों रखता है?' सासूमां बोली- 'भिखमंगों से सवाल-जवाब करने के बजाय उनसे दूर रह जो मांगे, देकर विदा कर। बहू यह सुनते ही डरगई। उसने तुरतफुरत भोजन की व्यवस्था की।

भोजन तैयार होने पर कोढ़ी ने कहा, 'मैं सूरजनारायण की थाल में जीमूंगा।' रानादे ने अपनी सास से यह बात कही तो सास ने कहा, 'वह तो जिद्दी है। अपनी जिद्द पर डटा रहेगा, नहीं तो श्राप देकर चला जाएगा। उसे उसी थाल में भोजन कराकर थाल को फिर साफ करलेना।'

थाल में भोजन परोसा गया तो कोढ़ी बोला, 'मैं सूरजनारायण के महल में भोजन करूंगा।' उसे महल में ले जाया गया और उसी तानमान से थाल परोसा। ज्योंही रानादे उसे जीमाने लगी, त्योंही उसने सैंस किरण रूप धारण कर साक्षात् सूर्यनारायण के रूप में दर्शन दिये। रानादे अचम्भे में पड़ गई। बोली, 'भगवन! आपने मेरे साथ छल किया।' सूरज बोले, 'तुमने भी तो मेरे पर ऐसी ही बिताई।' रातभर दोनों साथ रहे।

उधर सूरजनारायण की माता बड़ी परेशान हुई। बहू को कोढ़ी के साथ रहते बड़ी देर होने पर बेचैन हो भटकती रही। मन ही मन कहती रहीं, 'आने दे सूरज को, तुझे घाणी में पिलाऊंगी। शर्म नहीं आती जो कोढ़ले के साथ इतनी देर से बैठी हुई है।' उसे क्या मालूम कि वह कोढ़ी उसी का पुत्र सूरज है जिसने अपनी यह कला दिखाई है।

सुबह हुई। सूरजनारायण जाने लगे तो रानादे बोली, 'कोई न कोई ऐसा उपाय कर जाओ जिससे मां को शांति मिले। नहीं तो मेरा जीना मुश्किल हो जाएगा।' सूरजनारायण ने एक अंगूठी देने को कहा तो रानादे बोली कि अंगूठी तो उनके पास भी है। तब सैंस किरण में से एक किरण उन्होंने ढोलिये के नीचे छिपादी और प्रस्थान कर गये।

रानादे ने जाकर अपनी सास के चरण छुए। चरण छूते ही सासूमां बड़बड़ानेलगी। रानादे ने कहा, 'वे तो आपके सुपुत्र ही थे।' यह कह रानादे ने सासू को ले जाकर ढोलिये के नीचे छिपी किरण बताई परन्तु इस पर भी सास शांत नहीं हुई। उसका गुस्सा बढ़ता गया। वह सूरजनारायण पर बड़ी क्रुद्ध हुई और अपने हाथ में छड़ी लिए उसकी सभा में जा पहुंची।

सभा में बैठे सूरजनारायण ने दूर से ही जब अपनी मां को आते देखा तो वे बिना जूते पहने ही जा पहुंचे और चरण छूकर पूछने लगे, 'आज यहां कैसे पधारना हुआ?' मां बोली, 'तुमने मेरे साथ छल किया। तुम्हारे बिना सारी रात तड़फती रही। मुझे नींद नहीं आई। अब मैं क्या कहूं। मैं जैसी तड़फती रही तू भी वैसा ही बलता-जलता रहना।' सूरजनारायण बोले, 'मां ऐसी बात मत कहो। नहीं तो सारी दुनिया जलकर खाक हो जायेगी। मेहरबानी कर अपना श्राप वापस लेलो।' मां बोली, 'श्राप तो वापस नहीं लिया जा सकता। लेने से आता भी नहीं। अब तो यही है कि जैसे मैं रातभर जलती रही, तुम भी ऐसे ही बलते-जलते रहना। रातभर जैसा मेरी आंखों से पानी झरता रहा, वैसे तुम भी झरते रहना और जैसे मैं रातभर ठरती-ठिठुरती रही, वैसे तू भी ठरते-ठिठुरते रहना।' कहते हैं, इसी श्राप के कारण ग्रीष्म, वर्षा और सर्दी नामक ऋतुएं प्रारंभ हुईं।

पाठक स्वयं निर्णय करें कि क्या इस लोककथा में विश्व-मानव से संदर्भित जीवनी-शक्ति का जुड़ाव है? उस छात्रा को इस कथा में निहित किन भावों अथवा तत्वों ने सर्वाधिक रूप से प्रभावित किया? क्या आप भी इसे श्रेष्ठ लोककथा मानते हैं?

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 15 जून 2021

सम्पादकीय

लेकसिटी के रोक गार्डन में दरिंदों की दरार

पर्यटन नगरी लेकसिटी उदयपुर अपनी प्राकृतिक सौन्दर्य निधि के कारण जब से विश्व की नजरों में कैद हुई तब से इसे दागने वालों की नजरें भी आठ सौलह होने लगी हैं।

यहां की घुमावदार घाटियों, परिपाटियों, ऊंची-नीची उतार-चढ़ावजनित गलियों-अलियों, बाड़ियों-बगीचियों, हिचकोला खाते तालाबों-नालों, अठखेलियां करती सागर धाराओं से कौन माई का लाल लबोलब अबोहव नहीं होना चाहेगा?

इसी खुशमिजाजी के कारण हर समय पर्यटकों का गंगा जमनी आवागमन बना रहता है और इसी कारण यहां के प्रतापवंशीय रामलला रोटी पानी की जुगाड़ करते अपने शौर्य सत्व और स्वाधीन चैतन्य के समोरबाग और सहेलियों की बाड़ी जैसे अपने निवासों में नैनीताल बनाये हुए हैं।

लेकिन अपनी नजरों से कुफल देने वाले प्रवासी गिद्धों की तरह यहां की गमि के गौरव गर्वित को टांची देने वाले लफंगे भी हर समय देखे जाते हैं। ये एक तरह से वे कुकुरमुत्ता हैं जो बहते पानी निर्मला को कांजीमय बना वातावरण को दुर्गंधी बनाने का काम करते हैं।

इनमें विविध प्रकार के तस्कर, विविध रूपा चोर, विविध स्वांगी छली, कपटी, ठगी, हत्यारे उल्लेखनीय हैं। आये दिन अखबारों के पन्नों में इनसे सम्बन्धित नकारात्मक खबरें पढ़कर लोक और तन्त्र दोनों को बट्टा तो लगता ही है, शासन-प्रशासन के तन्त्र पर भी प्रश्न चिन्ह उभरते हैं।

कोई बच्चों की तस्करी कर कठोर श्रम के लिए अन्यत्र ले जा रहा है तो कोई पशुधन के दुर्दान्त वध के लिए तस्करी कर रहा है। कोई एटीएम तोड़ कर रूपये निकाल रहा है तो कोई हाईवे पर लूटपाट, आगजनी तथा हत्या जैसे कुकर्मों से बाज नहीं आ रहा है। कोई अवैध बजरी, डोडा-चूरा, अफीम-ड्रग को छाने-छिपके इधर-उधर कर रहा है तो कोई बैंकों पर डाका डाल रहा है।

कोई लोभ-लालच दे धन बढ़ाने का प्रलोभन दे रहासहा धन लूट रहा है तो कोई गले में पहनी स्वर्ण चेन की छीनाझपटी किये अदृश्य हो रहा है। कोई विधवा बेसहारों के अंग भंग कर उनमें पहने आभूषण बटोर रहा है। जेल से भागने वालों और वहां से छूट कर पुन: अपराधिक प्रवृत्तियां करने वालों की भी बन आई है। ऐसे में यही अरदास बाकी रह गई है- 'भगवान पधारो भारत मां अब थां बिन पड़र्‌या है फोड़ा।'

सच यह भी है कि लोक में लोक ही तन्त्र है। तन्त्र को चलाने संभालने संरक्षण देने वाले तन्त्री भी लोक के ही अहम हिस्से हैं। जहां राजा ही प्रजा हो और प्रजा ही राजा, हो वहां कोई किसको क्या कहना चाहेगा। रामई की चिड़िया, रामई का खेत। ऐसी स्थिति में कविवर दिनकर की यह हुंकार याद आती है-'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।'

पत्र-पिटारी

मांगटजी मोठी पर उम्दा जानकारी

शब्द रंजन के 15 फरवरी 2021 के अंक में लोकदेव मांगटजी मोठी के सम्बन्ध में सुरेन्द्र अंचल ने बड़ी अच्छी तथा अब तक अनसुनी जानकारी से समृद्ध किया। गोरमघाट-खामलीघाट के घाटे के बारे में यह तो सभी को मालूम है कि उदयपुर से मारवाड़ जंक्शन जाने वाली रेलगाड़ी से उस परिक्षेत्र का दृश्य ही बड़ा अद्‌भुत प्राकृतिक छटा लिए दर्शित होता है।

पूरी ट्रेन घूमती हुई लगती है और फिर ऊंचे चढ़ाव के लिए जो इंजन बदलना पड़ता है उसके लिए उपयुक्त जगह नहीं होने के कारण पूरी पटरी सहित इंजन घुमाया जाता है। ऐसा कमाल रेलवे में अन्यत्र कहीं हो, नहीं सुना गया। बरसात के मौसम में तो यह दृश्य शत-सहस्त्र गुना आनन्दित किये रहता है।

मांगटजी मोठी का जैसा चमत्कार पढ़ा वैसा अन्य देवताओं में प्रचलित हो, यह भी नहीं सुना। जो भी हो, शब्द रंजन के माध्यम से जो भी पढ़ने को मिल जाता है वह कुछ-न-कुछ नई सामग्री ही होती है जो अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्राय: पढ़ने को नहीं मिलती।

कोई पच्चीस वर्ष पूर्व मैंने एक गज़ल लिखी थी-

बैठो हूं मन मार भाइला, आण बणी रे सामै।
म्हारा हियरी पीड़ परोसूं, कणी-कणी रे सामै।।

आज तो मैं स्वयं ही इस कथन से साक्षात् हुआ जाकर प्रत्यक्ष भोग रहा हूं। तब एक काल्पनिक भाव था। आज उसी के यथार्थ में जी रहा हूं।

-शिव मृदुल, चित्तौड़गढ़

-लेख है कि आज शिव मृदुल एकाकीपन महसूस किये हैं। अधिक समय नहीं हुआ जब उनकी जीवन संगिनी सदैव के लिए उनसे बिछुड़ गई।

- सम्पादक

तुलसी ने सुनाया प्रताप को भरत चरित

राणा प्रताप हमारे प्रणम्य हैं। वे अकेले ऐसे वीरवर हैं जो राष्ट्रीय स्वतंत्रता और स्वाभिमान की मशाल प्रदीप्त किए हुए हैं। कुछ यही सोच मानसकार महाकवि तुलसीदास को बार-बार टंकार देता रहा और वे निकल पड़े उस स्वातंत्र्यवीर योद्धा से मिलने जो मेवाड़ की आन बान और शान का तेजोमय सूर्य बन अकबर जैसे महान बादशाह के लिए संकट का सिरदर्द बना हुआ था।

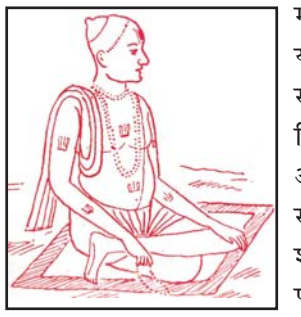

घुमावदार चक्कर देते मगरे-मगरियों और गन्नाटे देती घाटियों के बीच गफलत देती गुमनाम गुफा तक पहुंचने वाले तुलसीदास को देखकर सैनिक सहम गया। कड़कती आवाज में बाहर ही रोक दिया गया और भीतर जाकर अन्नदाता से निवेदन किया- 'हुजूर, लगने को तो कोई बड़ा तेजस्वी पुरूष लगता है परन्तु वह यहां क्या करने आया है। कोई गुप्तचर भी हो सकता है। अपना नाम संत तुलसीदास बता रहा है।'

युग के महान कवि संत तुलसी का नाम सुनते ही महाराणा प्रताप दौड़ पड़े। निगाहें नीची झुकी हुई देख तुलसी ने प्रताप को अपनी भुजाओं में भर हिरदे से लगा लिया। बोले- 'आप मेरे आराध्य देव राम के यशस्वी वंशज हैं। आदेश दें। आपके इस राष्ट्रीय महासमर में मेरा क्या योगदान हो सकता है? रानी ने पूजा का थाल लिए संत प्रवर की आरती उतारी और राजकुमार अमरसिंह ने शीतल जल से पांव पखारे।

अपने मानस पाठ में राम-भरत-मिलाप के प्रसंग से तुलसी ने पूरे सघन वन को अश्रु विगलित कर दिया। राम के अश्रु भरत के तथा भरत के अश्रु राम के वक्षस्थल को प्रेम की पीड़ से सहला रहे हैं। प्रताप का गला रूंध गया। बोले -'आपने मेरी आंखें खोलदीं। अब यह भाला मानसिंह के विरूद्ध नहीं उठेगा।'

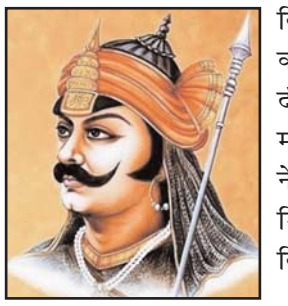

अपने पास रखा हीरा नजर करते हुए तुलसीदास ने विदा ली। आगरा पहुंचकर कविवर रहीम से सारा हाल कह सुनाया। भरत-मिलाप का वही प्रसंग उसी बुलंदगी से सुनाया तब रहीम के साथ-साथ मानसिंह की आंखें भी सजल हो उठीं। बोले -'अब मेरी तलवार किसी जातीय बंधु पर नहीं उठेगी।'

तुलसीदास-प्रताप की मुलाकात के इस प्रसंग का इतिहास में कहीं उल्लेख नहीं है। कहा जाता है कि तुलसीदास ने मानस के पूर्व भरत चरित की रचना की थी। बाद में जब उन्होंने सम्पूर्ण रामचरित को भाषाबद्ध करने का निश्चय किया तो अयोध्याकाण्ड के रूप में यही भरत चरित उसका दूसरा अध्याय बना जिसे विद्वानों ने मानस के रचना-प्रसंग में सर्वाधिक सुंदर तथा काव्यशास्त्रीय कसौटी पर खरा उतरने वाला माना।

हिन्दी-राजस्थानी के प्रसिद्ध साहित्यकार ओंकारश्री ने बताया कि 1977 के उनके कोलकाता प्रवास के दौरान रामकथा के महान मनीषी रामकिंकर ने भी तुलसी-प्रताप के मिलन को स्वीकार किया था।

इस प्रसंग को कुछ विद्वानों ने लिखा भी है। तुलसी ने तब उदयपुर से बारह किलोमीटर दूर देबारी के पास जिस कुटिया में विश्राम किया वह 'तुलसी कोटड़ी' नाम से जानी गई। इससे पूर्व मेवाड़ की राजरानी मीरांबाई को तुलसी द्वारा 'जाके प्रिय न राम वैदेही' शीर्षक पत्र-पद लिखने का प्रसंग प्रसिद्ध है ही। **-म.**

-अप्रैल-मई 2021, तुलसी सौरभ, जयपुर से साभार

ज्वलंत प्रश्न : मिलावटखोरों को फांसी क्यों नहीं?

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

इन दिनों खाने-पीने की चीजों और दवाइयों में मिलावट की खबरें बहुत ज्यादा आ रही हैं। दुनिया के मिलावटखोर तो बड़ी बेरहमी से पैसा कमा रहे हैं लेकिन सैकड़ों-हजारों लोग बेमौत मारे जा रहे हैं। इन मिलावटखोरों के लिए सभी देशों में सजा का प्रावधान है लेकिन भारत में तो उनकी सजा उनके अपराध के मुकाबले बहुत कम है।

सर्वोच्च न्यायालय ने मिलावटखोरों की खूब लू उतारी है। वकीलों से कहा कि आप इन मिलावटखोरों की पैरवी करने यहां खड़े हैं, जो लोगों की थोक में हत्या के लिए जिम्मेदार हैं। खाने-पीने की चीजों के मिलावटखोरों से भी ज्यादा खतरनाक दवाइयों में मिलावट करनेवाले हैं। नकली इंजेक्शनों, नकली गोलियों, नकली ऑक्सीजन कंसट्रेटरों और नकली कोरोना-किटों के सैकड़ों मामले भारत में ही नहीं, दुनिया के कई देशों में राक्षसी धंधों की तरह जोरों से चल रहे हैं। इन अपराधियों को तुरंत फांसी पर लटकाया जाए।

ये अपराधी सामूहिक हत्या के दोषी होते हैं। इन्हें फांसी की सजा क्यों नहीं दी जाती? इनके पूरे परिवार की संपत्ति जब्त क्यों नहीं की जाती? हमारे भारत के लोग जरुरत से ज्यादा सहनशील हैं। वे अपने विधायकों और सांसदों का घेराव क्यों नहीं करते? वे उन्हें इस मुद्दे पर सख्त कानून बनाने के लिए बाध्य क्यों नहीं करते? अदालतें इन मिलावटखोरों को फांसी पर तभी लटका सकेंगी, जब उस तरह का कानून होगा।

फिर भी दो ताजा मामलों में सर्वोच्च न्यायालय ने मिलावटखोरों की खूब लू उतारी है। नीमच के दो व्यापारियों को पुलिस ने इसलिए पकड़ लिया कि उन्होंने गेहूं पर सुनहरी पॉलिश (अखाद्य) चढ़ाकर बेचा था। दूसरे व्यापारी ने घी में ऐसी मिलावट की थी कि वह खाने लायक नहीं रह गया था। जो वकील इन दोनों मामलों में पक्षकारों की तरफ से बोल रहे थे, उनसे जजों ने पूछा कि क्या आप खुद वैसा गेहूं और वैसा घी खाना चाहेंगे?

दोनों वकीलों की हवा खिसक गई। उन्होंने वकीलों से कहा कि आप इन मिलावटखोरों की पैरवी करने यहां खड़े हैं, जो लोगों की थोक में हत्या के लिए जिम्मेदार हैं। अदालत क्या करेगी? उन्हें जेल भेज देगी। वे जेल में जनता के पैसे की मुफ्त रोटी खाएंगे और जब छूटकर आएंगे तो वही धंधा वे बड़े पैमाने पर फिर शुरु कर देंगे। खाने-पीने की चीजों के मिलावटखोरों से भी ज्यादा खतरनाक दवाइयों में मिलावट करनेवाले हैं। उनकी दवाइयों का सेवन करनेवाले तो अपनी जान से ही हाथ धो बैठते हैं। इंदौर शहर में ऐसे 10 लोग अचानक मर गए, जिन्हें रेमदेसेवीर के नकली इंजेक्शन लगाए गए थे।

नकली इंजेक्शनों, नकली गोलियों, नकली ऑक्सीजन कंसट्रेटरों और नकली कोरोना-किटों के सैकड़ों मामले भारत में पिछले दो-ढाई माह में सामने आते रहे हैं। भारत में ही नहीं, दुनिया के कई देशों में राक्षसी धंधों की तरह जोरों से चला है। 92 देशों ने ऐसे धंधों के खिलाफ सख्त कार्रवाई शुरु की है। इंटरपोल ने 1 लाख 13 हजार वेबसाइटों को बंद किया है, क्योंकि ये नकली दवाइयों का धंधा कर रही थीं। इस तरह के धंधे ब्रिटेन, वेनेजुएला, इटली, कतार आदि कई देशों में बहुत जोरों से चल पड़े हैं। इन राक्षसी धंधों पर काबू पाने का एक ही तरीका है। वह यह कि इन अपराधियों को तुरंत फांसी पर लटकाया जाए और उस घटना को राष्ट्रीय उत्सव की तरह प्रचारित किया जाए। फिर देखिए कि क्या होता है?

अपना देश अपनी संस्कृति

मन्नत पूरी होने पर मगरा जलाने की परम्परा

मेवाड़ में मगरों अर्थात् पहाड़ों की अधिकता है। उन पर आदिवासियों की छितरी बस्ती भी होती है पर अधिकांश पहाड़ियां घने-छितरे जंगल के रूप में होती हैं जहां विविध प्रकार के पेड़-पौधे, नानाप्रकार के फल-फूल होते हैं जिन पर आदिवासी जनजीवन निर्भर रहता है।

मार्च-अप्रेल में जब गर्मी भयंकर पड़ती है तब आदिवासी मन्नत पूरी होने पर मगरा जलाते हैं। इसे वे मंगरा स्नान कहते हैं। इस समय लगभग हर पहाड़ आग से जलता, स्वाहा होता लगता है। मगरा चूंकि उनकी आजीविका का मुख्य आधार होता है अत: वे मगरा बावजी (देवता) के रूप में उनकी पूजा करते हैं। ये देवता कहीं-कहीं अपने प्रतिनिधि भोपे के शरीर में साक्षात् हो भक्तों से सवाल-जवाब कर उनकी समस्याओं का समाधान करते हैं और भविष्यवाणी कर तदनुकूल आचरण करने की सीख देते हैं।

मगरों में आग लगने से नुकसान भी कम नहीं होता। कई बार मन में आता है, आदिवासियों में ऐसी प्रथा क्यों शुरू हुई? कोई विशेष अर्थ नहीं रहा। एक मनौती के पीछे पूरे पहाड़ को अग्नि के हवाले कर सब कुछ जला देने, भस्म करने को अब उचित भी नहीं माना जाता है।

इस दृष्टि से पड़ताल करने पर कुछ अन्य बिन्दु भी हाथ लगते हैं। इस मौसम में पतझड़ होने से सारे वृक्ष अपने पत्ते छोड़ देते हैं जिससे पूरा वनांचल पत्तों से ढक जाता है। मुख्यत: महुए के पेड़ से जब पत्तियां खिर जाती हैं तो फूल दिखाई नहीं देते जबकि इन फूलों से आदिवासी शराब बनाते हैं। भोजन की तरह उनका उपयोग करते हैं। खाते हैं और बाजार में बेचकर आर्थिक उपलब्धि अर्जित करते हैं। ऐसी स्थिति में वे पेड़ों के आसपास आग लगा देते हैं जिससे पत्तियां जल जाने पर फूल एकत्र करने में उन्हें सुविधा रहती है।

इन्हीं दिनों घरों पर छाया करने आदिवासी केलू, कवेलू बनाते हैं। उन्हें पकाने के लिए लकड़ी की आवश्यकता होती है सो जंगल से उन्हें सूखी लकड़ी उपलब्ध हो जाती है।

जरा सी असावधानी से भी जंगल आग पकड़ लेता है। बीड़ी-चलम पीने से, मधुमक्खियां उड़ाने के लिए धुंआ करने से, तेज हवाएं चलने से, गेहूं-जौ की फसल कटाई के बाद खेत में खड़े उनके डंठल, ठूंठ अथवा पराली जलाने से या फिर विद्युत लाइनों में स्पार्किंग से भी आग लगने-फैलने की घटनाएं देखने को मिलती हैं।

आदिवासियों में यह भी धारणा है कि आग लगने से अनेक हानिकारक जीव-जन्तु, कीट-पतंगे जल मरते हैं। कुछ पौधे-पेड़ ऐसे भी होते हैं जो आग से झुलसने के बाद अधिक अच्छे और शीघ्रता से विकसित होते हैं। सागवान का बीज तो आग की हल्की आंच से ही ठीक से पनपता है। बहुत सी व्यर्थ की खरपतवार नष्ट होने से पूरा जंगल नये सिरे से, नई आभा के साथ फलता-फूलता है।

बावजूद इसके आग से अनेक उपयोगी जीव-जन्तु, उपयोगी कीट-पतंगे, पक्षियों के परिवार, उपयोगी फंगस और जंगलों पर निर्भर रहनेवाले जीवों का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है।

कसरती कला के करिश्में

भारतीय लोककला मण्डल में जब संग्रहालय प्रारम्भ किया तो रस्ते चलते साधारण सामान्य व्यक्ति भी उसे देखने आ जाया करते थे। मेरी बैठक संग्रहालय से जुड़े एक छोटे से कक्ष में थी जिसके आगे एक कलात्मक पर्दा लगा रहता था। देखने वाले कभी-कभी उसके भीतर भी आ जाते।

मैं तो जो भी आता, उससे पूछताछ से कुछ-न-कुछ अपने काम की सामग्री प्राप्त कर ही लेता। वह दिन 13 जुलाई 1976 का था जब दिन को चार बजे एक प्रौढ़ व्यक्ति ने मेरे कमरे की चिक एक तरफ कर अन्दर झांका। मैंने उसे सहर्ष बुलाया। बैठने को कुर्सी दी और पूछताछ प्रारम्भ कर दी। वह व्यक्ति कसरती शरीर लिए कुछ करामाती लग रहा था। मेरी उत्सुकता बढ़ गई।

धरियावद निवासी उसने अपना नाम देवीलाल शर्मा बताते कहा कि वह अपने स्वयं की आरा मशीन चलाता है और उसकी माली हालत प्रारम्भ में तो अत्यन्त कमजोर थी पर अब परमात्मा की मेहर से ठीक है। घर-गिरस्थी का ठीक से भरणपोषण हो जाता है।

उसने बताया कि एक दिन दुकान के रास्ते से एक मुसलमान फकीर गुजर रहा था कि उसकी निगाह मुझ पर पड़ी। वह रूक गया और मुझे कहा कि तुम यदि चाहो तो अच्छे इन्सान बन सकते हो। उसका यह कहा मैं ठीक से नहीं समझ पाया तब हम दोनों पास की चबूतरी पर बैठ गये। उसने अपने शरीर का नाक, कान, होठ, गाल हिलाते मुझे चकित कर दिया। बोला, मन्दसौर के एक चिराग अली हैं जो धरियावद में ही रहते हैं, उन्होंने मुझे कुश्ती, कसरत, आसन, योग तथा अलग-अलग क्रियाएं सिखाईं।

फिर तो मुझे ऐसा चस्का लगा कि मैंने जगह-जगह भ्रमण शुरू कर दिया और अनेकों के साथ रह उनकी अच्छाइयां सीखीं। उसने गिनाना शुरू किया। बांसवाड़ा के उस्ताद गुलाम मोहम्मद से हाथ तथा सीने की मसल्स हिलाने, वहीं के रूस्तम पहलवान से कुश्ती, लाठी, तलवार चलाना, उदयपुर के माणकलाल से कुश्ती, कसरती दण्डबैठक सीखा।

यह चस्का बढ़ता गया तो बीकानेर, जयपुर, जोधपुर में घूमता रहा। यह जीवन दो वर्ष रहा तो बहु कुछ देखा। जैन साधु नानालालजी महाराज की सेवा में भी आठ माह रहा। गिरनार की यात्रा में दो माह महावीर कीर्तिजी नग्न साधुजी के पास बिताये। शम्भूदल के नागा साधु और एक ओगड़बाबा के साथ भी मैं रहा।

जोधपुर के रामदेवजी के मेले में चेतनगिरि साधु मिला। उसके पास हाथी था। उसने मुझे सांस भरकर कान, खोपड़ी, नाक, आंख, पिण्डलियां तथा भुजाएं हिलाना सिखाया। उसके साथ मैं डेढ़ माह रहा। उसने सांस भरकर अन्दर की नश खुलाना बताया।

देवीलाल ने बड़ी मस्ती से ये सब बातें प्रायोगिक रूप से करते मुझे बताता रहा। बोला, सौलह वर्ष की उम्र में चिराग अली ने पता नहीं, कैसे मेरे भाग्य को पहचानते मुझे रास्ता दिखाया। ये क्रियाएं साधारण तो नहीं हैं फिर मैं कैसे सीखता रहा, यह भी मेरे लिए अचरज है। अभी मेरी उम्र 42 वर्ष है।

मैंने यह जो भी विद्या समझो या करामात, उसे अपने पास नहीं रख राजस्थान के करीब डेढ़ सौ स्कूलों में बालकों को बताई और स्वस्थ एवं तन्दुरूस्त रहने को कहा। शरीर में लोच बनी रहे, इसके लिए मुझे प्रतिदिन ही व्यायाम करना होता है।

देवीलाल ने बताया कि जहां भी मुझे अवसर मिला, मैंने उसे छोड़ा नहीं और सीखने की धुन रखी। एकबार अजमेर में प्रभात सर्कस वाले से मेरा परिचय हो गया तब मैंने वहां तीन दिन अपने सीने पर हाथी चढ़ाना और जीप पार करना सीखा। जीप चढ़ाने का प्रदर्शन मैंने धरियावद में भी किया। उसने दोनों हाथों की पांचों अंगुलियों की संयुक्त एक अंगुली पर शरीर को उठाने का भी अभ्यास किया। यह अनुष्ठान दण्ड कहलाता है। देवीलाल ने स्वास्थ्य का राज सादा भोजन, दण्ड, कसरत और लंगोट का पक्का होना बताया।

समय और भाग्य तो अपनी-अपनी जगह है ही पर हमारे हाथ में यदि कुछ है तो यही कि मन में हर समय कोई सार्थक काम करने की तमन्ना, जिज्ञासा, जूझ तथा जज्बा रहे तो आत्मानन्द एवं आत्म संतोष की अनुभूति होती है।

लोकसंस्कृति की समझ और नीयत का पराभव

-पुन्नीसिंह

संस्कृति वह वटवृक्ष है जिसकी घनी छाया वर्तमान में होती है तो गहरी जड़ें अतीत में। उन जड़ों के बिना इस विशाल वृक्ष का खड़ा हो पाना भी सम्भव नहीं है। निसन्देह आज हम अपने पूर्वजों से अधिक जानते हैं और उनसे अधिक तरह के काम कर सकते हैं। इसका कारण सर्वप्रथम यह है कि हमारे से पहले संस्कृति का जो भवन निर्मित हो चुका है, उसमें हम नई-नई मंजिलें जोड़ते जा रहे हैं। लोकसंस्कृति के बारे में जो स्थिति पैदा हुई है उससे लगता है कि हम जड़ें काटकर पत्तों को सींच रहे हैं। हवा में महल बना रहे हैं।

यह ऐसा राग है जिसमें अनेक वाद्य एक साथ बजते हैं। किसी वाद्य का एक तार भी ढीला हो जाय तो पूरा राग चौपट हो सकता है। हम लोकसंस्कृति के संरक्षण की बात करते हैं तब लोकसंस्कृतिकर्मियों को पूरी तरह से नजरअन्दाज कर दिया जाता है। कभी-कभी तो हम उन्हें आदमी तक की हैसियत देने को राजी नहीं होते। संस्कृतिकर्मियों की जैसी दुर्गति आजाद भारत में हुई वैसी शायद किसी युग में न हुई। हमारे अच्छे संस्कृतिकर्मी राजनीति या मीडिया के चाकर होकर रह गये हैं। जो नहीं हुए हैं वे मुफलिसी में जीने का अभिशाप भोग रहे हैं।

संस्कृति के नाम पर छलावा है लेकिन मीडिया की सांठ-गांठ से वही असली के भाव बिकता है। उसी का बाजार आजकर गर्म है और इसी में एक प्रयास यह भी जुड़ा हुआ लगता है कि हमारी लोकसंस्कृति को जनमानस से काट कर अजायबघर की वस्तु बना दिया जाय।

कुछ लोग तो संस्कृति को कोई ऐसी चीज मानते हैं जो हवा में पैदा होती है और उसके बिना भी जीवन की समरसता बनी रह सकती है। उमंग मरती नहीं है। ऐसे लोगों को समझा पाना और भी ज्यादा मुश्किल है जो संस्कृति को धर्म के घेरे में लेकर बात करने के आदी हो चुके हैं। संस्कृति का जो भाग इस घेरे में नहीं आ पाता उसको वे संस्कृति मानने से भी इंकार करते हैं। लोकसंस्कृति ऐसे लोगों की अधूरी समझ और गलत नीयत का शिकार हुई है।

लोकसंस्कृति के संरक्षण की बात करते हैं तब लोकसंस्कृतिकर्मियों को पूरी तरह से नजरअन्दाज कर दिया जाता है। कभी-कभी तो हम उन्हें आदमी तक की हैसियत देने को राजी नहीं होते। संस्कृतिकर्मियों की जैसी दुर्गति आजाद भारत में हुई वैसी शायद किसी युग में न हुई। हमारे अच्छे संस्कृतिकर्मी राजनीति या मीडिया के चाकर होकर रह गये हैं। जो नहीं हुए हैं वे मुफलिसी में जीने का अभिशाप भोग रहे हैं।

जिस जनता का पसीना काफी सस्ता होकर पूंजीवादी हाट में बिका उसने अपनी सांस्कृतिक विरासत को हर कीमत पर बचाये रखा है। जनता जिन्दगी के प्रति जितनी आस्थावान होगी वह लोकसंस्कृति के प्रति उतनी ही सचेष्ट होगी। अपनी लोक परम्पराओं का आदर करना सीखें। उन्हें बाजारू वस्तु न मानें। मीडिया पर इस बात के लिए रोक लगायें कि वह लोककलाओं के नकली रूप को प्रस्तुत न करे। कम से कम इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को अपने केमरा पर नियंत्रण रखना ही चाहिये। लोककलाओं के कार्यक्रम अब स्टूडियो में रिकॉर्ड करने की दूषित परम्परा से बचना ही चाहिएं।

स्वभाव

मीलों में फैले
गेहूं के खेत में
सरसों का एक बीज भी
अपना स्वभाव नहीं छोड़ पाया।
वही रंग
वही रूप
वही गुणधर्म।
न मिट्टी उसे बदल सकी
न हवा और पानी।
खाद से उत्पादन में तो वृद्धि हुई
पर एक भी सरसों का कण
गेहूं नहीं बन सका।

-शासनश्री मुनि सुखलाल

बाजार / समाचार

डॉ. तुक्तक भानावत महावीर युवा मंच के अध्यक्ष निर्वाचित

उदयपुर (वि.)। महावीर युवा मंच की 07 जून को हुई वार्षिक बैठक में डॉ. तुक्तक भानावत को आगामी वर्ष के लिए अध्यक्ष चुना गया। यह घोषणा चुनाव अधिकारी अर्जुन खोखावत ने जूम एप पर हुई वार्षिक वर्चुअल बैठक में की।

मंच के मुख्य संरक्षक प्रमोद सामर ने कहा कि सभी उपस्थित सदस्यों ने सर्व सम्मति से निर्णय लिया वह हम सब के लिए स्वागत योग्य है। कोरोना जैसे संक्रमण काल में डॉ. भानावत की सेवाएँ मंच के लिए और अधिक उपयोगी सिद्ध होंगी।

निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. स्नेहदीप भाणावत एवं महिला प्रकोष्ठ अध्यक्षा रश्मि पगारिया ने अपने समय में हुई विविध गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए डॉ. भानावत की नियुक्ति पर प्रसन्नता व्यक्त की। कोषाध्यक्ष ओम पोरवाल ने अपने कार्यकाल का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया।

डॉ. भानावत ने सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करते सबके सहयोग, सम्बल एवं विश्वास से चली आ रही मुख्य प्रवृत्तियों को को बढ़ाने और कोरोना संक्रमण को देखते हुए और अधिक स्वास्थ्य संरक्षण सेवा से जुड़े कार्यक्रमों को शुरू करने की मंशा प्रगट की।

बैठक में निर्मल पोखरना, डॉ. सुमन जैन, आलोक पगारिया, संजय नागोरी, हर्षमित्र सरूपरिया, मधु सामर, प्रमीला पोरवाल, भगवती सुराणा, मुकेश हिंगड़, रमेश सिंघवी, सतीश पोरवाल, बसंत खिमावत, राजेश चित्तौड़ा, कमल कावड़िया, नीता खोखावत, प्रमीला एस. पोरवाल, मधु सुराणा, रंजना भानावत, ऋतु सिंघवी और मंजुला सिंघवी ने विचार रखे। संयोजन नीरज सिंघवी ने तथा धन्यवाद विक्रम भण्डारी ने दिया।

अजयकुमार आचार्य जार के जिलाध्यक्ष बने

उदयपुर (वि.)। जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) की बैठक में अजयकुमार आचार्य को सर्वसम्मति से उदयपुर इकाई का अध्यक्ष चुना गया।

प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य भूपेन्द्रकुमार चौबीसा ने बताया कि इसके लिए जार के प्रदेशाध्यक्ष हरिवल्लभ मेघवाल एवं प्रदेश महासचिव दीपक शर्मा ने अपनी स्वीकृति प्रेषित की है। अजयकुमार आचार्य ने कहा कि आने वाले समय में जार संगठन को अधिक सक्रिय कर पत्रकारों के हितार्थ मजबूत बनाया जाएगा और सदस्यता अभियान प्रारंभ किया जाएगा। निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने सभी का आभार व्यक्त किया।

सुमित गोयल, संजय खाब्या, शैलेष व्यास, मांगीलाल जैन, डॉ. रवि शर्मा, विपिन गांधी, पवन खाब्या, मुकेश मुंदड़ा, अल्पेश लोढ़ा, भूपेश दाधीच, विकास बोकड़िया, राजेन्द्रकुमार पालीवाल, राजेन्द्र हिलोरिया, अनिल जैन, रामसिंह चदाणा, विष्णु शर्मा 'हितैषी', पंकजकुमार शर्मा, सनत जोशी, आमीर मोहम्मद शेख, प्रकाश मेघवाल ने श्री आचार्य को बधाई प्रेषित की।

सिम्स अस्पताल की अनूठी उपलब्धि

उदयपुर (वि.)। सिम्स अस्पताल ने 91 वर्षीया महिला को दिल के दौरे की बीमारी एवं कोविड-19 दोनों का सफल उपचार कर अनूठी उपलब्धि हासिल की है। सिम्स अस्पताल में क्रिटिकल केयर फिजिशियन और एडल्ट आईसीयू के प्रभारी डॉ. भाग्येश शाह ने बताया कि मरीज सुशीला बेन को जब अस्पताल लाया गया तब उन्हें अस्थिर रक्तचाप की शिकायत और अधिक ऑक्सीजन की आवश्यकता थी। कोविड-19 का इलाज करते-करते उनकी एंजियोग्राफी और एंजियोप्लास्टी की भी तैयारी करनी पड़ी। ज्यादा उम्र, कोरोना और दिल के दौरे के जोखिम के बावजूद अस्पताल में भर्ती होने के दो दिन बाद वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. केयूर पारिख और डॉ. विनीत सांखला ने सुशीला बेन की एंजियोप्लास्टी की और स्टेंट प्लेसमेंट सफलतापूर्वक पूर्ण किया। इस प्रक्रिया के बाद उनका रक्तचाप और अन्य पैरामीटर सामान्य हो गए और वे पूरी तरह से ठीक हो गई। इसके बाद उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

कानोड़ के दीपक का केन्या में प्रकाश

कानोड़ (वि.)। शिक्षा नगरी कानोड़ के अनेक युवक देश-विदेश में कार्यरत रहते अपना प्रभाव-

पहचान दिये हैं। इसी क्रम में 29 मई को आईसीएआई केन्या चैप्टर नैरोबी की वार्षिक आम बैठक में 250 सदस्यों ने सर्व सहमति से कानोड़ के दीपक कण्ठालिया को अध्यक्ष पद पर चुन लिया। श्री कण्ठालिया नौ वर्ष लेगोस नाइजीरिया में कार्य करने के पश्चात विगत 5 वर्षों से नैरोबी केन्या में हैं। वे वहां की कई सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं और अपने नेतृत्व में कई तरह के कार्यक्रम सुचारु रूप से करवा रहे हैं। दीपक की पत्नी मनीषा वहां आकाशवाणी से सम्बद्ध हैं। वे साहित्यिक अभिरूचि से समृद्ध अच्छी कवयित्री हैं।

पारस हेल्थकेयर का आगरा में अस्पताल नहीं

उदयपुर (वि.)। पारस हेल्थकेयर ने स्पष्ट किया कि उसका आगरा में अस्पताल नहीं है। श्री पारस हॉस्पिटल आगरा शहर का एक स्थानीय अस्पताल है। इसका पारस हॉस्पिटल्स ग्रुप से किसी भी तरह का कोई संबंध नहीं है। कई मीडिया रिपोट में श्री पारस अस्पताल के बजाय पारस अस्पताल के नाम का गलत उल्लेख प्रतिष्ठित स्वास्थ्य सेवा समूह की छवि पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। पारस हेल्थकेयर के गुड़गांव, पटना, दरभंगा, पंचकुला, उदयपुर, रांची में छह अस्पताल हैं।

70 प्रतिशत ब्रेन ट्यूमर कैंसर के नहीं होते

उदयपुर (वि.)। वर्ल्ड ब्रेन ट्यूमर डे पर आयोजित परिचर्चा में पारस जे के हॉस्पिटल के न्यूरोसर्जन डॉ. अजीतसिंह ने बताया कि ब्रेन ट्यूमर का सफल उपचार पूर्णतया संभव है। 70 प्रतिशत ब्रेन ट्यूमर कैंसर के नहीं होते है। ब्रेन ट्यूमर के प्रमुख लक्षणों में आखों से कम दिखाई देना, कम सुनाई देना, हाथ-पांव का कम काम करना, सिर दर्द, उल्टी आना, दौरे आना, चेहरे में सुनापन आदि शामिल हैं। इनकी पहचान कर तुरंत उपचार करवाना चाहिये। डॉ. अमितेन्दु शेखर ने बताया कि अभी तक ब्रेन ट्यूमर के कोई व्यापक कारण सामने नहीं आये है। कुछ जेनेटिक कारण हैं। डायरेक्टर विश्वजीतकुमार ने बताया कि पारस जे के हॉस्पिटल में प्रदेश की सबसे अनुभवी न्यरोविशेषज्ञ की टीम उपलब्ध है और यहां न्यूरो-स्पाईन सर्जरी की नियमित सेवाएं 24 घण्टे उपलब्ध है।

प्रो. सारंगदेवोत फिर पांच साल के लिए कुलपति चुने गए

उदयपुर (वि.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय की ओर से गठित सर्च कमेटी ने अगले पांच वर्षों के लिए कुलपति के पद पर कर्नल प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत का फिर से चयन किया है। सूचना मिलते ही प्रो. सारंगदेवोत को शहर के प्रबुद्ध नागरिकों, सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों ने बधाई प्रेषित की।

इस अवसर पर प्रो. सारंगदेवोत ने जनुभाई की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की और कहा कि विद्यापीठ कार्यकर्ताओं की संस्था है। उच्च स्तरीय बेहतर मानव संसाधन एवं कार्यकर्ताओं की कुशलता, मेहनत एवं लगन से ही विद्यापीठ उन्नति एवं प्रगति के मार्ग पर उन्नयन है। पं. नागर ने 83 वर्ष पूर्व तीन रूपये व एक किराये के भवन में पांच कार्यकर्ताओं के साथ संस्था की शुरूआत की थी जो आज 50 करोड़ के वार्षिक बजट तथा 15 हजार से अधिक विद्यार्थियों के साथ वट वृक्ष बन गई है।

प्रो. सारंगदेवोत ने बताया कि पिछले 09 वर्ष में नेक में एक ग्रेड विश्वविद्यालय, युनि रेंक के तहत उदयपुर संभाग में प्रथम, राजस्थान के 70 विवि में 07वां, भारत के 900 विवि में से 142वां स्थान व विश्व के 30 हजार विवि में से 5032वां स्थान प्राप्त कर एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

पूर्व में यूजीसी द्वारा पांच पाठ्यक्रमों की ही मान्यता प्राप्त थी लेकिन वर्तमान में 22 स्नातक, 30 स्नातकोत्तर, 10 डिप्लोमा सहित 115 पाठ्यक्रमों की मान्यता प्राप्त हो गई है। प्रो. सारंगदेवोत के कार्यकाल के दौरान विधि महाविद्यालय, फार्मेसी, बीए बीएड, बीएसी बीएड, विज्ञान महाविद्यालय, कन्या महाविद्यालय, एग्रीकल्चर महाविद्यालय, स्पेशल बीएड, योगा, एमपीएड सहित कई नये पाठ्यक्रमों की शुरूआत हुई।

हिंदुस्तान जिंक को चार पुरस्कार

उदयपुर (वि.)। सीआईआई द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित प्रतियोगिता में हिन्दुस्तान जिंक ने चार पुरस्कार जीते हैं। इस प्रतियागिता में देशभर से कुल 52 कंपनियों ने भाग लिया।

इसमें जिन 15 कंपनियों को 'उत्कृष्ट' की मान्यता प्रदान की गई उनमें दो इकाइयां हिन्दुस्तान जिंक की हैं। जिंक की राजपुरा दरीबा खदान और चन्देरिया लेड-जिंक स्मेल्टर ने परियोजिना के लिए 'केस स्टडी - कंपनियों द्वारा इकोलॉजी रेस्टोरेशन के लिए मान्यता' की श्रेणी में 'उत्कृष्ट' पुरस्कार तथा राजपुरा दरीबा खदान में जैव विविधता पार्क का विकास और चंन्देरिया लेड-जिंक स्मेल्टर में वेस्ट डिस्पोजल साइट रिमेडियेशन का जेरोफिक्स वेस्ट यार्ड की बहाली के लिए पुरस्कार जीता है।

2000 से अधिक प्रतिभागियों में से, 52 को 'ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' के विजेताओं के रूप में अंतिम दौर के लिए चुना गया जिसमें जिंक के एचएसई विभाग से शमा जैन और तेजस बागरेचा विजेता रहे हैं।

उदयपुर होम शेफ्स चैम्पियनशिप का शुभारंभ

उदयपुर (वि.)। यूनाइटेड होटेलिएर्स ऑफ उदयपुर सोसायटी के तत्वावधान में उदयपुर में पहलीबार हो रही ऑनलाइन उदयपुर होम शेफ्स चैम्पियनशिप 2021 का शुभारंभ हुआ। दो महीने चलने वाली इस चैम्पीयनशिप का समापन 14 अगस्त को होगा। चैम्पियनशिप का स्लोगन #udaipurfightscorona है।

सोसायटी के अध्यक्ष यूबी श्रीवास्तव, सचिव रूपम सरकार, उपाध्यक्ष आशीष छाबड़ा तथा ट्रेजरार उज्वल मेनारिया ने बताया कि प्रतियोगिता को स्थानीय व अंतर्राष्ट्रीय कम्पनियां सहयोग कर रही हैं। इस दौरान ख्यातनाम शेफ तथा फूड इंडस्ट्री के विशेषज्ञों द्वारा लाइव कुकिंग शोज व वेबीनार का आयोजन किये जायेंगे। चैम्पियनशिप से एकत्रित राशि करोना से जीवन खोने वाले होटल कर्मचारियों के परिजनों को वितरित की जायेगी और उन्हें रोजगार के मौके देने में पूरी मदद की जायेगी।

उदयपुर की स्मृतियां लिए कीर्ति राणा (6)

'ईमानदारी जिंदा है' जैसी खबरों से मिसाल बनी :

दशकों से अखबारों में 'ईमानदारी जिंदा है' शीर्षक से सिंगल कॉलम खबर छपती रही है कि किसी ने रुपयों से भरा पर्स लौटाया। ऑटो चालक ने यात्री को ढूंढकर बेग लौटाया आदि। उदयपुर में काम करते हुए इस तरह की खबरों को प्रमुखता से छापने का असर यह रहा था कि उदयपुर शहर के किसी भी थाने में पहुंचा फरियादी अपना कीमती सामान गुम होने की रिपोर्ट लिखाने पहुंचता तो सम्बन्धित थाना स्टॉफउसे सलाह देता था कि पहले भास्कर ऑफिस जाकर पता कर लो, हो सकता है वहां पर किसी ने जमा करा दिया हो।

'ईमानदारी जिंदा है' कॉलम ने पाठकों का इस हद तक विश्वास जीत लिया था कि थाने की अपेक्षा लोग भास्कर पर भरोसा करने लगे थे। इस कॉलम के तहत प्रकाशित की गई खबरें एक तरह से अपनी खबरों की मार्केटिंग किस तरह की जा सकती है, यह भी समझा जा सकता है।

दैनिक भास्कर में इस कॉलम वाली पत्रकारिता में कुछ रोचक किस्से भी सामने आए। आज जिक्र करता हूं उस किस्से की जिससे यह कॉलम शुरु करने की भी प्रेरणा मिली थी। एक सुबह सिटी टीम के साथ मार्निंग मीटिंग चल रही थी कि ऑफिस के सेवक ने आकर सूचना दी एग्रीकल्चर कॉलेज के कुछ लड़के मिलना चाहते हैं। फटाफट मीटिंग निपटा कर मैंने उन 3-4 लड़कों को अपने केबिन में बुलवाया।

उन लड़कों ने भूरे रंग का एक फटा हुआ लिफाफा टेबल पर रखा, जिसमें से नोटों की गड्डी झांक रही थी। इस बीच मैंने उन सबके लिए चाय-पानी लाने के लिए सेवक से कह दिया था। कॉलेज के होस्टल में रहने वाले इन लड़कों ने घटनाक्रम बताया। सुबह चाय-नाश्ते के लिए सूरजपोल पर थड़ी (गुमटी) की तरफ जा रहे थे कि सड़क पर यह लिफाफा पड़ा था। जैसी कि हम सब की आदत रही है, इन लड़कों ने भी उस लिफाफे को ठोकर मारते हुए गेंद की तरह उछालने की कोशिश की। ठोकर लगने से लिफाफा फट गया और उसमें रखे नोट सड़क पर बिखर गए। लड़कों ने दौड़कर लिफाफा उठाया और बिखरे नोट एकत्र कर उसी फटे लिफाफे में रख कर भास्कर में जमा कराने आए।

लिफाफा उलट-पलट कर देखा तो उस पर दैनिक भास्कर लिखा हुआ था। मुझे समझते देर नहीं लगी कि ग्रामीण क्षेत्रों में अखबार के बंडल लेकर जाने वाली टैक्सियों के किसी ड्रायवर को उस क्षेत्र के एजेंट ने एजेंसी पेटे बकाया राशि जमा कराने के लिए यह लिफाफा दिया होगा और वह टैक्सी चालक सूरजपोल सर्किल पर चाय पीने रुका होगा और असावधानी के कारण रुपयों से भरा यह लिफाफा सड़क पर गिर गया होगा, जो इन छात्रों के हाथ लग गया।

होस्टल में रहने वाले इन छात्रों की ईमानदारी पर मुझे आज भी रश्क इसलिए है कि वे चाहते तो लिफाफा फाड़ कर फेंक देते और करीब 16 हजार की इस राशि से कुछ दिन पार्टी, मौज-मजे कर सकते थे, लेकिन वे चारों ग्रामीण परिवेश वाले छात्र यह हजारों रुपए फटे लिफाफे सहित कार्यालय में जमा कराने आए थे।

बस हमारा पासपोर्ट मिल जाए :

उदयपुर झीलों, पैलेस, डेस्टिनेशन वेडिंग आदि कारणों से विश्व मानचित्र पर टूरिस्ट सिटी के रूप में पहचाना जाता है। एक दोपहर भास्कर का ऑफिस तलाशते हुए एक विदेशी जोड़ा आ पहुंचा। इन लोगों ने कहा, पहले हम पुलिस स्टेशन रिपोर्ट लिखाने गए थे। वहां अधिकारी ने सलाह दी पहले आप भास्कर पता कर लीजिए।

इस जोड़े की चिंता यह थी कि जिस बेग में कैमरा, डॉलर और पासपोर्ट आदि रखा था, वह बेग कहीं गिर गया है। इनका कहना था कैमरा, डालर नहीं भी मिले लेकिन हमारा पासपोर्ट मिल जाए। इन्हें चाय-पानी के लिए पूछा और बातचीत का सिलसिला चल ही रहा था कि एक बुजुर्ग सज्जन ने केबिन का दरवाजा खोला और अंदर आने की अनुमति मांगी। उन्हें भी बैठने का इशारा कर मैं उस विदेशी जोड़े की ओर मुखातिब होकर अपनी टूटी-फूटी अंग्रेजी में आश्वस्त कर रहा था कि यदि आपका बेग किसी ने हमारे यहां जमा कराया तो आपको तुरंत सूचित कर देंगे। उनका नंबर लेकर, मैंने उन्हें भी अपना मोबाइल नंबर दिया।

वो दोनों उठने को हुए कि अपनी बात कहने को आतुर उन सज्जन ने अपने कपड़े के झोले से एक लेदर बेग निकालते हुए कहा, ये बेग जमा कराने आया हूं। बेग पर उन फॉरेनर की नजर पड़ी और दोनों खुशी से चीख पड़े। उनका ही तो बेग था। दोनों को विश्वास भी नहीं हो रहा था कि ऐसा भी हो सकता है। इस बीच मैं उन सज्जन के लिए चाय लाने के लिए प्यून को कह चुका था।

उन सज्जन ने बताया कि होटल के पास वाली दुकान से उन्हें यह बेग मिला है। पेशे से शिक्षक उन सज्जन का विदेशी जोड़ा लगातार शुक्रिया अदा कर रहा था। उनसे कहा कि आप बेग का सारा सामान चेक कर लीजिए। उन्होंने सबसे पहले पासपोर्ट तलाशा। बाकी सामान भी यथावत था। अब वे दोनों उन पूर्व शिक्षक को ईनाम देने की जिद कर रहे थे, लेकिन वो स्वीकार नहीं करना चाहते थे।

काफी मानमनौवल के बाद वो राजी हुए, इस बीच मैं अपने फोटोग्राफर को ऑफिस आने के लिए कह चुका था। शिक्षक के हाथों उस विदेशी जोड़े को बेग भेंट करते हुए फोटो करवाया। उस जोड़े ने शायद 25 डॉलर का नकद ईनाम दिया था उन पूर्व शिक्षक को। इस कॉलम ने खूब लोकप्रियता दिलाई अखबार को।

नया करने की छूट भी बहुत है :

अकसर सम्पादक स्तर के मित्र पत्रकारों को कई बार यह कहते सुना है कि लिखने, नया करने की आजादी खत्म होती जा रही है। उनकी बात में दम हो सकता है लेकिन दैनिक भास्कर में पत्रकारिता के अपने 28 साल के दौरान मैंने पाया कि रिपोर्टर से सम्पादक स्तर तक (नीतिगत मामलों को छोड़कर) खूब आजादी है, बशर्ते आप उसका समाज-हित में उपयोग करते हों। नया करने की भी खूब छूट है लेकिन आपके इस नए या प्रयोगवादी पत्रकारिता में पाठक हित की प्रधानता हो।

मुझे याद आता है उदयपुर भास्कर में कार्यकारी सम्पादक रहते मेरे संपर्क में आयुर्वेद अधिकारी वैद्य शोभालाल औदिच्य आए। सिटीचीफ प्रकाश शर्मा एक दिन उन्हें ऑफिस लेकर आए। काफी देर चर्चा हुई। उनके जाने के बाद मुझे खयाल आया क्यों न इनका कॉलम शुरु किया जाए। इस सोच के पीछे मेरा स्वार्थ एक तो हमारे देश की पुरातन आयुर्वेद पद्धति के प्रचार-प्रसार में सहयोग करना, दूसरा ऐलोपैथी के महंगे उपचार खर्च से लोगों को राहत दिलाना, तीसरा रोग का जड़मूल से सफाया होना था।

जब शोभालालजी को कुछ दिनों बाद पुनः ऑफिस बुलाया, मेरी मंशा बताई और आयुर्वेद पर हर सप्ताह कॉलम के माध्यम से बीमारियों का निदान-परामर्श की बात कही तो पहले उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि हर सप्ताह ऐसा कॉलम शुरु हो सकता है। कॉलम शुरु हुआ। पाठकों की बढ़ती प्रतिक्रिया से स्पष्ट हो चला कि आमजनता को पसंद आ रहा है। इस कॉलम के प्रकाशन का एक फायदा भास्कर स्टॉफ को भी हुआ। परिवार में अस्वस्थ होने वाले सदस्यों को आयुर्वेद आधारित औषधियों की निशुल्क सुविधा हो गई और विभिन्न जांचों के नाम पर अनावश्यक खर्च से राहत भी मिल गई।

बेहद लोकप्रिय रहा ज्योतिष कॉलम :

उदयपुर में पं. निरंजन भट्ट मेरे लोकल गार्जियन समान रहे। ज्योतिष आदि को लेकर उनसे अकसर चर्चा होती रहती थी, लेकिन राजस्थान पत्रिका परिवार से नजदीकी संबंधों के कारण वे चाह कर भी भास्कर से जुड़ने में हिचक महसूस करते थे। इसी दौरान टीम के वरिष्ठ सदस्य डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने एक दिन पं. गौरव शर्मा से परिचय कराया। ज्योतिष और तंत्र-मंत्र के ज्ञाता गौरव शर्मा से ज्योतिष कॉलम को लेकर चर्चा के साथ ही मैंने पूछा, पाठकों की हथेली के फोटो के आधार पर उनके भविष्य के सम्बन्ध में जानकारी दे सकते हैं क्या? पाठकों की व्यक्तिगत जिज्ञासा का पत्र से जवाब देने की भी योजना बनाई गई।

कॉलम के तहत पाठक अपनी हथेली का छापा, फोटोकॉपी, अंगूठे या फिंगर प्रिंट भेजते और उन हस्तरेखाओं के अध्ययन पश्चात पं. शर्मा पाठकों के भविष्य, सवालों की जानकारी देते थे। व्यक्तिगत जिज्ञासा वाले पत्रों के लिए पोस्ट बॉक्स नंबर दिए जाने की लोकप्रियता ऐसी रही कि हर सप्ताह वह बॉक्स ठसाठस भर जाता था। सारे पत्रों के जवाब हर सप्ताह दे पाना भी संभव नहीं रहता था। सारे कॉलमों में यह कॉलम सुपर हिट साबित हुआ। पं. गौरव शर्मा को भी पहचान मिली। ज्योतिष के कारण भास्कर के पाठकों (रीडर शिप) का जुड़ाव भी हुआ।

प्राकृतिक चिकित्सा किताब प्रकाशन :

उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान और उसके संचालक (जो बाद में प्रवचनकार भी हो गए) कैलाश 'मानव' का खूब नाम रहा। चूंकि भास्कर सर्वाधिक पाठकों वाला अखबार हो चला था लिहाजा एकाधिक कार्यक्रमों में कैलाश 'मानव' उनके नैचरोपैथी सेंटर में आमंत्रित करते रहते थे। जब मुझे कुछ शारीरिक पीड़ा हुई तो मैंने नैचरोपैथी के उपचार को आजमाना ठीक समझा। संस्थान की गाड़ी लेने आती, वहां डॉ छैलबिहारी शर्मा मेरी मिट्टी-पट्टी करते, दवाई के रूप में किचन के मसाले, फल आदि सेवन करने का परामर्श देते थे। इस प्राकृतिक उपचार से मुझे राहत भी मिली। इसी बीच सितंबर का महीना समाप्त होने को था।

एक दिन डॉ छैलबिहारी शर्मा को मैंने ऑफिस बुलाया और कहा कि गांधी जयंती से आपका प्राकृतिक चिकित्सा का कॉलम शुरु कर सकते हैं। योजना बनी कि हर सप्ताह वे किसी एक बीमारी का घरेलु-प्राकृतिक-उपचार बताएंगे। साथ ही भास्कर पाठकों से उनकी बीमारी आदि को लेकर उनके प्रश्न आमंत्रित करेगा और उन प्रश्नों के उत्तर अगले सप्ताह कॉलम के साथ प्रकाशित करेंगे। 2 अक्टूबर से इस कॉलम को शुरु करने की वजह यह थी कि खुद महात्मा गांधी नैचरोपैथी के पक्षधर थे, दूसरा इस कॉलम के बहाने बापू के विचारों से आज की पीढ़ी को जोड़ना भी था।

पाठकों ने इस कॉलम को इसलिए भी पसंद किया कि उपचार में उनका धेला भी खर्च नहीं होना था। प्राकृतिक उपचार में सहयोगी अधिकांश सामान-मसाले आदि-तो रसोईघर में रहते ही हैं। दूध, दही, छाछ, फल, फूल आदि सामग्री भी न्यूनतम खर्च पर उपलब्ध हो जाती है। डॉ सीबी शर्मा का यह कॉलम भी खूब पसंद किया जाने लगा। पाठकों को सप्ताह में तीन अलग-अलग दिन ऐसे कॉलम मिल रहे थे जो सीधे-सीधे परिवार के हर सदस्य को जोड़ने की ताकत रखते थे। इन कॉलमों का असर पाठक संख्या में वृद्धि का कारण भी बना और जिसका सीधा असर राजस्थान पत्रिका पर पड़ा।

भानावतजी के संस्कृति प्रेम का सहयोग :

उदयपुर यानी लेकसिटी अर्थात राजस्थान में झीलों की नगरी वाला शहर। झीलों को बचाने के लिए वैसे तो कई संगठन सक्रिय रहे हैं लेकिन अनिल मेहता और उनकी टीम किसी परिचय की मोहताज नहीं है। अनिल मेहता द्वारा झीलों की बेहतरी को लेकर किए जाने वाले काम को बाकी अखबार कितना कवरेज देते हैं इससे हटकर भास्कर टीम ने श्रेष्ठतम कवरेज का लक्ष्य बना कर रखा।

इसी तरह राजस्थान में गणगौर, भोपाजी, कल्लाजी सहित अन्य गांव देवता आदि को लेकर उदयपुर के लोककलाविज्ञ डॉ महेन्द्र भानावत (जिनके पुत्र पत्रकार तुक्तक भानावत हैं) ने राजस्थान की लोकसंस्कृति पर खूब काम किया है। कई बार तो खुद भानाावतजी फोन कर के याद दिलाते थे कि दो दिन बाद फलां जयंती या राजस्थान का लोकोत्सव आने वाला है। उनके इस मार्गदर्शन से आंचलिक क्षेत्रों में भास्कर के डाक संस्करणों को खूब मजबूती मिली। **- समाप्त**

शब्द रंजन--- ज्ञान रंजन और बहु रंजन भी

शब्द रंजन केवल शब्दों का रंजन ही नहीं, सरस्वती का अनुरंजन भी है। इसमें आपकी बड़भागी आहुति इस रूप में भी हो सकती है-

मुख पृष्ठ	10,000 /
अंतिम पृष्ठ	7000 /
साधारण पृष्ठ	5000 /
आधा पृष्ठ	3000 /
चौथाई पृष्ठ	2000 /

अपने प्रियजनों की स्मृति निमित्त विज्ञापन सहयोग

सदस्यता शुल्क :

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1500/
साहित्यिक चौपाल	1000/
वार्षिक संस्थागत	500/
वार्षिक व्यक्तिगत	300/

Shabd Ranjan, UCO BANK,
Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908,
IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c

सुविधा और सुरक्षित प्राप्ति के लिए कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।

shabdranjanudr@gmail.com

vedanta
transforming elements

HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India

हम पर्यावरण संरक्षण और संतुलन हेतु प्रतिबद्ध हैं।

हमारा लक्ष्य आज और आने वाले कल को
हरित और स्थायित्व प्रदान करना है।

World's leading integrated Zinc-Lead Producer | World's 6th largest integrated Silver Producer

Hindustan Zinc Limited

Yashad Bhawan | Near Swaroop Sagar | Udaipur - 313004 | Rajasthan | India
P : +91 294-6604000-02 | www.hzlindia.com | CIN - L27204RJ1906PLC001208
www.facebook.com/HindustanZinc | www.twitter.com/CEO_HZL | www.twitter.com/Hindustan_Zinc
www.linkedin.com/companyhindustanzinc | www.instagram.com/hindustan_zinc

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।